रामानुजाचार्य

गुप्तोत्तर काल में भारत में दो सशक्त सामाजिक धाराएँ प्रवाहित हुई, पहली - विदेशी जातियों का आत्मसाती करण
दूसरी - जाति प्रथा की कठोरता।
समाज मुख्यत: चार वर्णों में विभाजित हो गया - ① ब्राह्मण ② क्षत्रिय ③ वैश्य ④ शुद्र।
स्त्रियों की स्थिति में काफी गिरावट आई थी
दासों की संख्या काफी बढ़ी थी तथा छुआ छुत का प्रचलन काफी बढ़ गई थी
दान, धर्म, तीर्थ, पाप-पुण्य, सात्विक भोजन, तामसिक भोजन मोक्ष की प्राप्ति इत्यादि ऐसे अनेक नियम सामाजिक जीवन में व्याप्त हो गई थी लोग भ्रम की स्थिति में जी रहे थे। ऐसे में रामानुजाचार्य का विचार समाज की प्राचीनतम प्रचारक के उभरा। भक्ति आन्दोलन में इनका महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है इनका जन्म तमिलनाडु में श्रीपेरम्बुदूर में हुआ था तथा ये एक वैष्णव संत थे।

) रामानुजाचार्य का दर्शन, शंकराचार्य के "अद्वैतवाद दर्शन" के विरोध में प्रतिक्रिया है। इन्होंने "विशिष्ट द्वैतवाद" का मत दिया तथा ज्ञान के स्थान पर भक्ति को महत्व दिया
) जहाँ शंकराचार्य ने ब्रह्म को सत्य और जगत को मिथ्या माना वहीं रामानुज ने जीव को आनन्दमय, चैतन्यमय सर्वप्रकाशवान तथा विशिष्ट पूर्ण, साथ ही जगत को सत्य माना है।
) इनके अनुसार ब्रह्म, जीव तथा जगत तीनों में एक विशिष्ट सम्बन्ध है।
) इन्होंने विशिष्ट द्वैतवाद का सिद्धान्त दिया। एकाग्रचित होकर ईश्वर की भक्ति करने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकता है।

क्रमश: —